मानव उत्पत्ति की गुत्थी सुलझी

जैव विकास और मानव शास्त्र में मानव उत्पत्ति बहस का एक प्रमुख मुद्दा है। लगता है कि अफ्रीका में पाए गए ताज़ा मानव जीवाश्म इस बहस का पटाक्षेप करेंगे। बहस का मुद्दा दरअसल यह है कि आधुनिक मानव (*होमो सेपिएन्स*) की उत्पत्ति कहां हुई थी। एक मत यह रहा है कि मानव सदृश जीव *होमो इरेक्टस* दुनिया भर में फैल गया था और फिर लाखों वर्षों की अवधि में अलग-अलग स्थानों पर इसका विकास *होमो सेपिएन्स* में हुआ। इसे बहु-क्षेत्रवाद कहते हैं। दूसरा मत यह रहा है कि *होमो सेपिएन्स* अफ्रीका में ही अस्तित्व में आया और वहीं से यह दुनिया भर में फैला। इसे 'अफ्रीकी उत्पत्ति' कहते हैं।

अब तक अफ्रीकी उत्पत्ति के सिद्धांत को मानने में प्रमुख अड़चन यह थी कि इस क्षेत्र से उस काल के मानव जीवाश्म नहीं मिले थे जो मानव उत्पत्ति का समय माना जाता है। पूर्वी व दक्षिणी अफ्रीका से 3 लाख साल पुराने मानव सदृश जीवाश्म तो खूब मिले हैं मगर वैज्ञानिक मानते हैं कि आधुनिक मानव करीब 1-2 लाख वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया था।

अब जो जीवाश्म मिले हैं वे तकरीबन 1,60,000 वर्ष पुराने हैं। माना जा रहा है कि ये मानव जीवाश्म रिकॉर्ड में महत्वपूर्ण कमी को पूरा करेंगे। दरअसल ये जीवाश्म एथियोपिया में एडिस अबाबा से 230 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में हर्टो नामक गांव में 1997 में मिले थे। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (बर्कले) के टिम व्हाइट के दल ने अथक मेहनत से इन जीवाश्मों के टुकड़ों को सहेजा था। उसके बाद इन्हें आपस में जोड़ने तथा इनका काल निर्धारण करने के प्रयास चलते रहे। व्हाइट के दल ने पोटेशियम के विघटन से आर्गन बनने की क्रिया के आधार पर इन जीवाश्मों की उम्र तय की। पता चला कि इनकी उम्र करीब डेढ़ लाख वर्ष है।

ये जीवाश्म छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में उस स्थान पर बिखरे हुए थे। एक बच्चे की खोपड़ी के 200 टुकड़े मिले थे। इन पर रक्त वाहिनियों के निशान देख-देखकर इन्हें

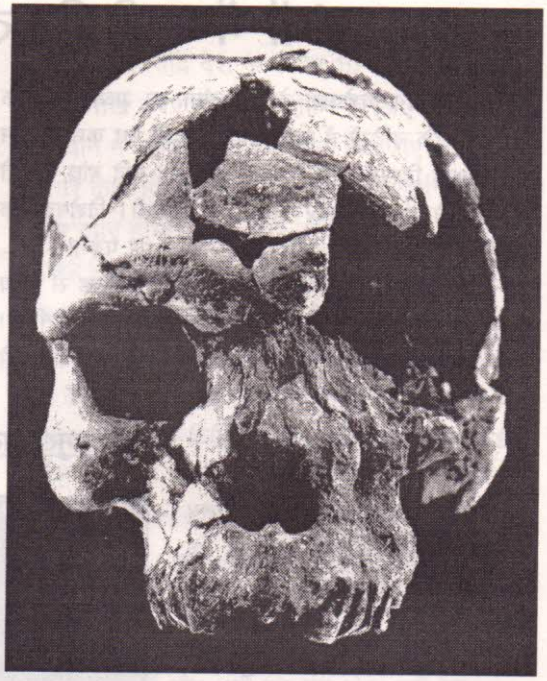

आपस में जोड़ा गया। इसी प्रकार से एक वयस्क के जीवाश्म को जोड़-जोड़कर पूरा किया गया। इस काम में 2 साल लगे।

जुड़ने के बाद बनी खोपड़ी लगभग मानव सदृश दिखती है मगर कई अंतर भी हैं। जैसे एक अंतर तो यह है कि इसका मस्तिष्क कोष्ठ आधुनिक मानव से बड़ा है। इसके अलावा इसका चेहरा धंसा हुआ है और भवें उभरी हुई हैं। इन अंतरों के कारण इसे *होमो सेपिएन्स* की उप प्रजाति *होमो सेपिएन्स इदाल्तु* नाम दिया गया है। *इदाल्तु* का अर्थ स्थानीय अफार लोगों की भाषा में बुजुर्ग होता है।

जीवाश्म पाए जाने के स्थान से हिप्पो, मगरमच्छ, कैटफिश आदि के जीवाश्म भी मिले हैं। हिप्पो की हड्डियों के विश्लेषण से पता चला है कि *होमो सेपिएन्स इदाल्तु* शायद हिप्पो की अस्थि मज्जा को खाते थे। मानव जीवाश्मों की बारीकी से जांच करने पर उनकी कई सांस्कृतिक परम्पराओं की भी झलक मिलती है।

वैसे भी 'अफ्रीकी उत्पत्ति' के पक्ष में कई अन्य प्रमाण रहे हैं। *इदाल्तु* की खोज ने इस बहस पर लगभग पूर्ण विराम लगा दिया है। ***(स्रोत फीचर्स)***